जर्मनी और उजबेकिस्तान की यात्रा पर रवाना होने से पहले प्रधान मंत्री का वक्तव्य

दिनांक 22 अप्रैल, 2006
नई दिल्ली

मैं जर्मनी के चांसलर मार्केल के निमंत्रण पर हैनोवर और बर्लिन की यात्रा करूंगा। मेरा यह दौरा हमारी रणनीतिक भागीदारी के एक हिस्से के रूप में हमारे दोनों देशों के बीच होने वाली वार्षिक शिखर बैठकों का एक हिस्सा है। मैं अपने दौरे के दौरान राष्ट्रपति श्री होर्स्ट कोहलर से भी मिलूंगा। चूंकि जर्मनी यूरोप की प्रमुख शक्तियों में से एक है और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर एक महत्वपूर्ण भागीदार है, इसलिए जर्मनी के मेरे दौरे से उसके साथ संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बनाने का अवसर मिलेगा। जर्मनी विश्व के अग्रणी व्यापारिक राष्ट्रों में से एक है। जर्मनी जहां भारत के सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यापारिक भागीदारों में से एक है वहीं यह हमारे देश में प्रमुख विदेशी निवेशकों में से भी एक है।

जर्मनी की मेरी यह यात्रा ऐसे समय पर हो रही है जब भारत प्रतिष्ठित हैनोवर मेला, 2006 जो विश्व की सबसे बड़ी प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी है, में एक सहयोगी देश के रूप में भाग ले रहा है। भारत ने पिछली बार 22 वर्ष पहले हैनोवर मेले में एक सहयोगी देश के रूप में हिस्सा लिया था। इस मेले में 300 से अधिक भारतीय कम्पनियां भाग लेंगी जिनमें सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम, बड़े व्यापार घराने, लघु एवं मझौले उद्यम तथा वाणिज्य एवं उद्योग जगत के सभी प्रमुख चैम्बर्स शामिल हैं। इस मेले में उस भागीदारी की व्यापक क्षमता को प्रदर्शित किया जाएगा जो भारत परस्पर लाभ हेतु व्यापार, उद्योग और प्रौद्योगिकीय सहयोग के लिए करना चाहता है। मैं भारतीय मंडप का भी उद्घाटन करूंगा।

जर्मनी से वापस आते समय मैं राष्ट्रपति श्री इस्लाम करीमोव के निमंत्रण पर उजबेकिस्तान का द्विपक्षीय दौरा भी करूंगा। दोनों देशों के पुराने आपसी संबंध हैं। दोनों देशों के बीच घनिष्ठ सांस्कृतिक और सभ्यताई संबंध भी हैं। उजबेकिस्तान, मध्य एशिया क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण देश है जिसे हम अपने विस्तारित पड़ोस का हिस्सा मानते हैं। हम आशा करते हैं कि हम अपने परम्परागत संबंधों के आधार पर इन्हें नई सार्थकता और महत्व प्रदान करेंगे जिनमें राजनीतिक, आर्थिक, रक्षा, ऊर्जा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा सांस्कृतिक क्षेत्र शामिल हैं।

.....